एक मुस्कराहट

हरिदास
भूजलविज्ञान प्रभाग
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान

पहले पहले मैं वक्त की ठोकरों से डरा करता था । जब कभी भी वक्त ठोकर देता तो कई-2 घंटों तन्हाई (अकेले) में बैठकर सिसकता रहता था जुबां पर दर्द भरे लम्हें आते और दिल करता कि मैं बहुत रोऊँ , वक्त का नाम सुनकर मेरा दिल बहुत कांपा करता था मेरी जिन्दगी बेहद तन्हा थी । कोई साथी संगी ऐसा न था कि जो समझ पाता कि मैं इन ठोकरों का सामना कैसे करूँ । बस एक दिन यूँ ही पड़े-पड़े आँख लग गई और एक सपना देखा कि सागर के किनारे एक चट्टान पड़ी थी पानी की लहरें बड़ी जोर से चट्टान पर चोट कर रही थी , लेकिन चट्टान तो फिर भी सीना ताने खड़ी थी । बस कुछ देर मैं यूँ ही देखता रहा वक्त की तमाम ठोकरों का दृश्य दिमाग में एक चलचित्र की तरह घूमता रहा । वह अकेली चट्टान जो लहरों की ठोकरें खाकर भी तनकर खड़ी थी । कुछ सोचकर बस अगले दिन से मेरी जिन्दगी में बदलाव आ गया । इस सपने ने मुझे बहुत कुछ सिखा दिया । इसने मुझे जिन्दगी में जीना सिखा दिया अब मैं वक्त का नाम सुनकर कांपता नहीं बल्कि अब मैं वक्त की हर एक ठोकर के बदले में मैं उसे एक मुस्कराहट देता हूँ । हाँ में उसे एक मुस्कराहट देता हूँ ।

****